स्वाभिमान भी चुभता है

"अपने स्वार्थ और अभिमान का रुतबा तो वैसेही सताता है|
पर अपना स्वाभिमान भी अब बेवजह हमें गिराता है|"

"समाज में हमारी ईज्जत है|
लोगों ने अगर हमे कुछ भला बुरा कहे दिया तो हम कहाँ मूह दिखाएँगे?
किसीने अगर लोगों के सामने हमे कुच्छ कहे दिया तो?
गाली देकर अगर अपशब्द कहे तो हम कहीं के नही रहेंगे?
फिर तो लोग हमारे बारे में क्या सोचेंगे?
उसने मुझे ईतना कुछ कहे दिया है, वोह भी सब के सामने, अब तो उसे माफ़ी मांगनी ही पड़ेगी|"
ऐसी अनगिनत बातें हमे बेवजह दिन-रात सताती है|

मुसीबतों में अगर हम खुद ही खड़े हो जाए और आगे बढ़ने की हिम्मत रखे, तो उससे बेहतरीन चीज़ और कोई नही| पर अगर हममे ही कोई कमज़ोरी है, तो मदत माँगने पे हम क्यों ईतराते है? क्यों हम आगे चलकर उनकी मदत नही लेते है? सामने से अगर कोई मदत करना चाहे, तो हम शरमाके कहीं दूर क्यों भागते है?
"नहीं यार, मुझे उसके पास नहीं जाना| मै कैसे उससे मदत मांगू?"
और ऐसेही अपने स्वाभिमान की आढ में हम हर पल जीते है और हमेशा उसे जिंदा रखते है|

स्वाभिमान की ईस आँधी में हम ऐसे खो जाते है की सरलता को पल में भूल जाते है|
"हमारा भी कुछ मान, सन्मान या स्वाभिमान है कि नहीं?
कितनी बार हम ही झुके लोगों के सामने?" और बस ऐसेही लोगों के इंतज़ार में हम युहीं बैठे रहेते है|

Sevak

बस लोग हमें मिलने आए, हमें याद करे, हमारी तबियत पूछे, हमारी देखभाल रखे, और हमारी तारीफे करके हमारा दिल बहेलाते रहे| फिर तो क्या हम जन्नत कि सेर के लिए निकल पड़ते है| पर जब वही बात हमें सामने चलके जब लोगों के लिए करनी हो, तो बस हमारे कदम डगमगाते है| सामने से कभी भी किसी का हाल नहीं पूछेंगे, लोगों की चलकर मदत भी नही करेंगे और उनकी तरफ देखेंगे भी नही|

किसी पार्टी या फिर किसी मेजबानी में अगर कोई मिलने न आये, या फिर कोई हमारे तरफ देखे भी नहीं, या अंजाने में कोई हमें भूल जाए तो बस किसी कोने में अकेले ही पड़े रहेंगे| पर आगे चलकर सामने से हम बात करने नहीं जायेंगे| शायद हम छोटे हो जायेंगे| लेकिन हम ये भूल जाते है कि, हमारे ईसी रवैये से हमारी सोच कितनी छोटी हो जाती है|

सवाल तो ढेर सारे छुपे है मेरे मन में, जिनका जवाब मैं ढूँढ रहा हूँ हर गली-चौहारे में|

१. क्या होता हे यारों अगर किसीने हमें गाली दे दी?
   क्या खून खोलने लगता हे अगर वो किसी के सामने दे दी?
२. कुछ होता है क्या, अगर किसीने अपने स्वाभिमान को ठेस पहुंचा दी?
३. किसीने अगर अपना मजाक उड़ाया, तो क्या होता है?
४. क्यों हम अपने स्वाभिमान को जिन्दा रखने के लिए दिन रात लड़ते रहते है?
५. कोई गलती होने पर हम मुह दिखाने लायक क्यों नहीं रहेते?

ऐसे अनगिनत सवाल मेरे जहेम में है, जो खत्म ही नहीं होते है|

अगर हम अपने अभिमान को चकनाचूर कर देंगे,
और हो सके तो अपने स्वाभिमान को भी कहीं दूर छोड़ देंगे|
तो यक़ीनन वोह सारी खुशियों को अपने कदमो तले पा लेंगे|

Sevak